मौसी के मोज़े

पढ़ना है समझना

प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रांकन – जोएल गिल

सज्जा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर – अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफ़ेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुज़हत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा शगुन ऑफसैट (प्रा.) लि., बी-3, सैक्टर-65, नोएडा 201301 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-878-2

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए '*बरखा*' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। *बरखा* से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 **फोन** : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बेंगलुरु 560 085 **फोन** : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 **फोन** : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 **फोन** : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 **फोन** : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : *पी. राजाकुमार*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *शिव कुमार*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *गौतम गांगुली*

मौसी के मोज़े

मौसी

मुनमुन

नानी

एक दिन मौसी नानी से मोज़े बनाना सीख रही थीं।
दोनों आँगन में चारपाई डाल कर बैठ गईं।
मुनमुन चारपाई के नीचे लेटी हुई थी।

उन दोनों के पास खूब सारी ऊन और सलाइयाँ थीं।
नानी ने अपने घुटनों पर नीली ऊन की लच्छी चढ़ाई।
मौसी ने अपने घुटनों पर पीली ऊन की लच्छी चढ़ाई।

नानी ने हाथ घुमा-घुमा कर नीले रंग का गोला बनाया।
मौसी ने हाथ घुमा-घुमा कर पीले रंग का गोला बनाया।
मुनमुन ऊन के गोलों को ध्यान से देख रही थी।

नानी ने मौसी को फंदे डालकर दिए।
मौसी ने मोज़े बुनना शुरू किया।
मुनमुन चुपके-से चारपाई पर चढ़ गई।

मौसी मोज़ा बुनने में लगी हुई थी।
मुनमुन ने गोला नीचे लुढ़का लिया।
वह गोले से खेलने लगी।

जब ऊन खिंची तो मौसी ने गोले की तरफ़ देखा।
उन्होंने मुनमुन को गोले से अलग कर दिया।
मौसी ने गोले को लपेट कर गोद में रख लिया।

मौसी फिर से मोज़ा बुनने लगी।
मोज़ा थोड़ा-थोड़ा दिखने लगा था।
नानी ने सिलाई पर गुलाबी ऊन के फंदे बना दिए।

मौसी वापस बुनाई करने लगीं।
बुनाई में अब गुलाबी ऊन भी आ रही थी।
गुलाबी गोला भी हिल रहा था।

मौसी की बुनाई में गुलाबी फूल दिखने लगा।
मोज़ा काफ़ी लंबा लटकने लगा था।
नानी ने अपने लिए एक सिलाई पर फंदे डाल लिए।

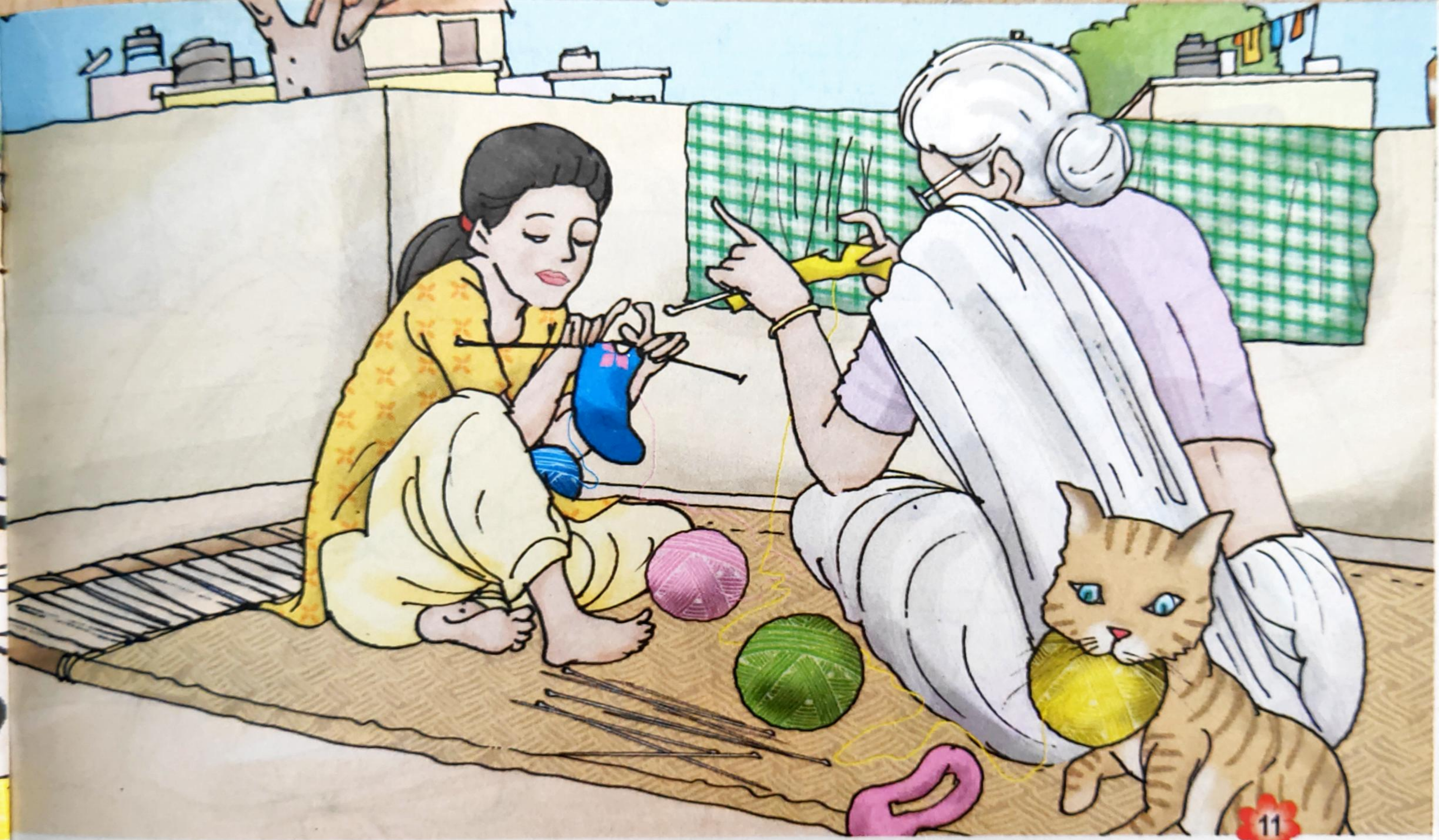

नानी ने भी बुनाई शुरू कर दी।
मुनमुन फिर चुपके से ऊपर आ गई।
वह नानी के गोले को नीचे ले जाने लगी।

नानी ने मुनमुन के मुँह से गोला छुड़ाया।
उन्होंने मुनमुन को अपने कंधे पर बैठा लिया।
मुनमुन उनके कान पर अपना मुँह रगड़ने लगी।

नानी ने मौसी का मोज़ा हाथ में लिया।
उन्होंने मौसी को फंदे बंद करना सिखाया।
मौसी ने उस मोज़े के फंदे बंद कर दिए।

मौसी का एक मोज़ा पूरा हो गया।
वह अपना मोज़ा देखकर बहुत खुश हुईं।
नानी ने मुनमुन को नीचे उतार दिया।

मौसी अपना मोज़ा पहनकर देखने लगीं।
मोज़ा मौसी के पैर में आया ही नहीं।
मोज़ा तो छोटा पड़ गया।

मौसी ने मुनमुन को अपनी गोद में बैठाया।
उन्होंने मोज़ा मुनमुन को पहना दिया।
मोज़ा मुनमुन को आ गया।

रमा और रानी की और कहानियाँ

स्तर 1
स्तर 2
स्तर 3
स्तर 4

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

2077

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

रु. 10.00

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-878-2